ठंड की
वो रात
हिंग्लिश हॉरर लघु कथाएँ
ऑथर - दास्तान अली

# नींद पक्षाघात

मुझे काफ़ी बचपन से ही स्लीप पैरालिसिस की दिक्कत हो रही है। हलाकी जैसा जैसा वक्त गुजर रहा है ये काम हो रहा है। लेकिन इससे जुड़ी कुछ यादें आज भी मानो नासो के खून को जमा देती हैं है. जो लोग नहीं जानते कि स्लीप पैरालिसिस क्या होता है उन्हें बता दूं कभी-कभी हम लोगों का सोने का रूटीन खराब हो जाता है। है स्लीपिंग साइकल के बिगडने से कभी-कभी ऐसा होता है कि आप रात को एक बांध से जग जाते हैं, आंखें खुली लेकिन आप अपने हाथ की जोड़ी नहीं हिला पाते. ये चीज कुछ मिनटों तक रहती है फिर चली जाती है। लेकिन ये कुछ मिनट हाय आपको डराने और आपकी रूह में सिहरन

भुगतान करने के लिए काफी हैं। क्योंकि जिन्हे ये पहली बार होता है उन्हें स्लीप पैरालिसिस की दौरन अपने आस-पास भूत प्रेत के होने पर का वेहम होता है. मेरे साथ भी पहली बार ऐसा ही हुआ। ये कहानी लिखते वक्त भी जैसे वो पुरानी यादें मेरे जिस्म में कपकपी भुगतान कर रही हैं.

आज से लगभाग तेरह साल पहले की बात है। मुख्य सर्दी छुट्टियों में अपने मामा के पास रहने चला जाता था। मात्र माँ ने शादी नहीं की थी। वो एक 40 साल के लंबे हट्टे कट्टे इंसान थे जिनके सेब की कई बाग थे। उनके यहां हर तरफ हरियाली, सेब के बड़े-बड़े बाग। मेरा तो मन नहीं करता था वहां से वापस आने का। हम साल भी मैं शीतकालीन छुट्टियों में माँ के यहाँ था. मुझे आज भी याद है, वो क्रिसमस की रात थी. मैं शाम से ही टीवी में घुसा हुआ था। स्नैक्स पे स्नैक्स खाकर टीवी पर कार्टून के मजे ले रहा था। रात के लगभाग 9 बजे अंकल ड्राइंग रूम में आते हैं।

“रसोई में नूडल्स रखे हैं, खा लेना।” ये कहके वो ऊपर अपने कमरे में चले गये। मेरा पेट तो चिप्स और चॉकलेट से ही भरा हुआ था फिर भी मैंने किचन में जाकर एक कटोरा भर लिया नूडल्स लिये. ड्राइंग रूम जहां मैं टीवी देख रहा था वो लगभग खाली है. दीवार के पास टीवी है, और उसके सामने सोफा है। बाकी तीनो तरफ दरवाजे हैं. एक जो किचन में ले जाता है, एक जो सीढ़ियाँ की तरफ़ और एक मुख्य दरवाज़ा। नूडल्स खाते-खाते और टीवी देखते देखते ना जाने मुझे कब नींद आ गई। पता नहीं मुझे सोये हुआ कितना वक्त हुआ कि अचानक मेरी आंख खुल गई। मैं जगा गया था, हां काहू की मुझे सिर्फ ऐसा लगा कि मैं जाग गया था। मेरी आँखें खुली, कमरा बिल्कुल वैसे ही था लेकिन पता नहीं क्यों हवा मैं एक अजीब सा डर और ठंड थी। मैने उत्थने की कोशिश की लेकिन पता नहीं क्यों पूरी ताकत लगाने के बाद भी मैं अपने आप को हिलाता हूं नहीं पा रहा था. ये मुझे क्या हो रहा था. मैं चीख़ कर माँ को बुलाने की कोशिश की लेकिन मेरे मुँह से आवाज़ ही नहीं निकल रही थी. डर मुझपे हावी हो रहा था और जिस्म जैसा ठंड में भी पसीने से भीग चुका था। फिर मुझे एक अजीब एहसास हुआ, एहसास जैसा कि कोई मुझे देख रहा हो, एहसास जैसा मैं वहां अकेला नहीं था, कोई और भी हमारे कमरे में था।

मैंने अपनी आंखें बायीं ओर दरवाजे की तरफ घुमायी, वो खुला हुआ था. अरे तुम कैसे हो गए. ये दरवाजा तो मैने खुद बंद कर दिया किया था. मैं अपने शरीर को हिलाने की पूरी कोशिश कर रहा था लेकिन सब बेकार था. फिर अचानक मुझे किसी की आहट सुनाई दी। हम मुख्य दरवाजे से कोई काली से आकृति अंदर आई। वो क्या था पता नहीं. कोई इंसान या कोई जानवर. वो छत तक लंबा था, इंसान जैसी आकृति

लेकिन पूरा शरीर एक बांध काला, जैसे कि वो साये का बना हो। वाह
धीरे-धीरे मेरी तरफ बढ़ने लगा। उसकी जोड़ी जैसी ज़मीन को
छू ही नहीं रहे. लग रहा था कि जैसे वो हवा में उड़ रहा था
हो. मेरा दिल जैसा किसी ट्रेन के इंजन की तरह धड़क रहा था। डर
मुझ पर इतना हावी था कि मानो किसी भी पल मेरा दिल काम करना
बैंड कर देगा. मैं चाह कर भी अपना चेहरा दूसरी तरफ नहीं कर सकता
पा रहा था और ना ही अपनी आंखें बंद कर रहा था। वो साया
मेरी तरफ बढ़ने लगा। उसका जैसा कोई चेहरा ही नहीं था। था तो बस
साया और अँधेरा. लेकिन अब मुझे उसकी आंखें और हाथ के
नाखुन दिखने लगे. उंगली के नाख़ून जैसे तेज़ तलवार की
धार. और आंखें इतने लाल की जैसे जहन्नुम की शोले देख रहे हैं
हो. वो अपने हाथ फेल कर मेरी बिस्तर के करीब आया। वाह मेरी
सीने के ऊपर उड़ने लगा। मुझे अपने सीने पर इतना दबाव है
इतना वज़न महसूस पति की मानो मेरी जान ही निकल जायेगी। वो साया
अपना चेहरा मेरे चेहरे के बिल्कुल नज़दीक लाकर ज़ोर से चिल्लाया।
वो चीख इतना तेज और इतनी डरावनी थी कि मेरे नसो का खून जैसा
जम सा गया. मुझे उसके मुँह से निकलने वाली तेज़ हवा अपने
चेहरे पर महसुस होने लगी। मैं चीखना चाहता था लेकिन मेरा
जिस्म मेरे नियंत्रण में नहीं था.
मैंने ऊपरवाले को याद करने की शुरुआत की और जितने भी
धार्मिक छंद याद थे सब बोलने शुरू किये और अचानक मेरे
मुँह से चीख निकली. मैं नींद से जाग गया था। मैं कप्ता हुआ
सोफ़ा से उठा. मुख्य दरवाजा बंद था. टीवी अभी भी ऑन था, नूडल्स के
बाउल में अभी भी बचे हुए नूडल्स थे। कमरे में कोई नहीं था
मात्र शिव. बाकी रात मैं सो नहीं पाया. आंख बंद करता तो वही
आकृति सामने नाचने लगती थी. सुबह होते ही मैंने माँ से
कहा कि मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा। शायद मेरी तबियत ख़राब
है. मैं घर वापस जाना चाहता हूं। मैंने पहली बार पूरी सर्दी
छुट्टियाँ अंकल के यहाँ नहीं बिताई। घर आकार भी हर दो तीन हफ़्ते बाद मुझे ये स्लीप
पैरालिसिस होता ही रहता था। फ़िर आख़िरकार
मैंने अपने स्कूल के कंप्यूटर लैब में जाकर इंटरनेट पर सर्च किया
किया. मैं पता करना चाहता था कि क्या सिर्फ मेरे साथ ही एशिया हुआ,
हां दुनिया में और भी लोग हैं। मुझे पता चला कि इसे सोना है
लकवा कहते हैं जो अक्सर नींद की दिनचर्या बिगाड़ने की वजह से होता है
है.
और शायद ये सही जानकारी थी क्योंकि इस बार मैंने
अंकल के यहां बहुत देर तक जाग कर टीवी देखी थी। रात को देर से
सोता था और सुबह जल्दी उठ कर क्रिकेट खेलने निकल जाता था। मात्र
स्लीप साइकल के बिगडने की वजह से ही शायद ऐसा हुआ। पर जो भी हो,
हमें पहले स्लीप पैरालिसिस के अनुभव ने मुझे अंदर से हिला दिया था।

इतना डर, इतना खौफ मुझे पहले कभी नहीं हुआ था। अब तो मुख्य बहुत बड़ा हो चुका हूं लेकिन पूरी कोशिश करता हूं कि मेरी नींद साइकिल कभी ना बिगड़े. क्योंकि हमें साये को मैं फिर से नहीं देखना चाहता है. ना नींद में ना जागते हुए.
*----

# ऐसा हाथ तो नहीं था

ये कहानी मेरी नहीं है. ना मेरी फैमिली या रिलेशन में ये ख़तना हुई. ये वाकया मेरे पिता के किसी पुराने दोस्त के साथ हुआ था. इसमें कितना सच है और कितना झूठ ये आप लोग ही तय करेंगे। इस बात को शायद तीस साल बीत चुके हैं। वो दिसंबर की एक कड़कड़ाती हुई ठंडी रात थी। ठंड और कोहरा इतना था कि चार कदम दर पर भी कुछ दिख नहीं रहा था। और सन्नाटा इतना की मानो इंसान तो क्या किसी जानवर का भी नामो निशान ना हो। है सन्नाटे को खुशियाँ हुई किसी की कदमो की आवाज सुनायी देती है। वो कोई और नहीं बल्कि मेरे पिता के पुराने दोस्त हैं जिनके साथ ये दिल देहला देने वाली घाटना हुई। उनका नाम तो मुझे याद नहीं लेकिन चलो फ़िलहाल उनको हम आदिल नाम से बुलाते हैं। आदिल की शादी हुई कुछ महीने हाय गुज़रे हैं। आज रात वो अपने एक दोस्त के निकाह पर गे द. रात की शादी थी और बीवी के साथ ठंड बहुत ज्यादा ना ले जाना ही उन्हें ठीक समझ। वो निकाह से लौट रहे थे. बदन पर सफेद रंग का कुर्ता पायजामा, और एक काली जैकेट। वाह तेज़

कदमों के साथ चल रहे थे और जल्दी से जल्दी घर पहुंचना
चाहते थे. वो बार-बार अपने हाथों को आपस में मिलते ताकि
थोड़ी गर्मी मिल सके.
उन्हें अपनी घड़ी में देखा तो रात के करीब 10 बजे।
वो सड़क पर बाईं ओर चल ही रहे थे कि अचानक उनकी नज़र सड़क के
दूसरी तरफ गई. वहां एक औरत थी अधेड़ उमर की। वो चने बीच
राही थी. इतनी रात को चने के बीच हुई औरत को देखना अजीब तो था
लेकिन बहुत से फेरी वाले अक्सर ऐसा करते थे। आदिल ने सोचा की क्यों
ना थोड़े चने ले लिए जाएं और खाते खाते घर चले जाएं।
वो सड़क के दूसरी तरफ़ जाता है और उस औरत से दस रुपये के चने
मांगता है. वो औरत चने पर नमक, प्याज़ डालकर उसे दे देती है
है. वो चने लेकर आगे बढ़ा ही था कि अचानक वो औरत के पीछे
से आवाज लगती है.
“भैया आपने पैसे तो दिये नहीं।”
आदिल पैसे देना भूल गया था। उसने जब से दस का नोट निकाला और
औरत की तरफ बढया. औरत ने अपना हाथ आगे बढ़ाया। आदिल ने एक
ऐसी खौफनाक चीज़ देखी जो किसी की भी रूह को जमाने के लिए काफी है
थी. उस औरत का हाथ घोड़े जैसा था। आदिल के हाथ से चने का
पैकेट छूट गया. वो बस यहीं दुआ कर रहा था कि ये एक सपना हो
और उसकी बीवी उसे आकर जगा दे। और वो उथकर सपने को भूल गया है
जाएगा लेकिन ये सपना नहीं था। ये हकीकत थी, हमारी औरत का हाथ
सच में घोड़े जैसा था. बाल से भरा हुआ. आदिल मानो उसी जगह
जम गया था, उसकी जोड़ी जैसी किसी जंजीर से बंधे थे और हम
अंजीर को किसी बड़ी सी चट्टान ने रोक रखा था। क्या यह भी ठंडा है
उसके बदन से पसीना पानी की तरह बह रहा था। वो औरत एक
अजीब सी साथी हँसी के साथ बोली, "क्या हुआ भैया? पैसा दो ना।"
आदिल उल्टा पांव भागा. इतना तेज़ की शायद पहले कभी ना
भागा हो. उसको ये भी ख्याल नहीं आ रहा कि इतना तेज भागते हैं
उसके चप्पल भी पीछे छूट गए। वो तो बस किसी भी हाल में
मैं वहां से डर भागना चाहता था। वो दौड़ता रहा जब तक
उसके जिस्म ने जवाब नहीं दिया। वो रोड किनारे रुक कर हाफने लगा
जैसे कोई बिन पानी की मछली। वो बार बार पीछे मुड़कर
देखता था कि कहीं वो शैतानी औरत उसके पीछे तो नहीं। पुरी
रोड सूंसन पड़ी थी. किसी भी जिंदा चीज का नमो निशाना नहीं
था. की तभी उपयोग किसी चीज की आवाज सुनाई दी। वो एक रिक्शा था,
वो वाला रिक्शा जो साइकिल की तरह पैडल मारकर चलाया जाता था।
आदिल हमें रिक्शा वाले के सामने कूद पड़ा।
“रुको भाईजान।” उसने लड़खड़ाती हुई आवाज़ में बोला, “दूसरी गली।”
तक लेते चलो भाईजान. मन मत करना भाईजान।” आदिल बोल नहीं रहा
था, वो तो जैसे हमें रिक्शा वाले के आगे गिड़गिड़ा रहा था।

रिक्शा वाले को तो पहले समझ नहीं आया कि ये आदमी इतना हांफ़ है क्यों हो रहा है.
“ठीक है बैठ जाओ”, रिक्शा वाले ने कहा, “आराम से बैठो।”
भाई, परेशान मत हो।”
धीरे-धीरे वो रिक्शा दूसरी गली की तरफ बढ़ता है जहां आदिल का घर था. वो बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा था। जैसे उम्मीद हो कि वो औरत अभी भी उसका पीछा कर रही थी।
रिक्शा वाला भी उसकी हालत देख कर पूछ ही बैठा की वो इतना डर हुआ क्यों है. आदिल ने पूरी बात बताई है कि कैसे वो चने लेने के लिए एक फेरी वाली औरत के पास रुका। और कैसे जब उसने अपना हाथ दिखाया तो वो घोड़े के जोड़ी जैसा था। ये सुनते हाय रिक्शा वाले ने ज़ोर से ब्रेक लगा दी। ब्रेक्स इतनी ज़ोर से लगी थी की आदिल आगे का धक्का खाकर हमें रिक्शा वाले की पीठ पर लादा। वाह मुधकर आदिल को देखता है और कहता है, "क्या सच है? घोड़े।"
जैसा हाथ था?”
“हां भाई, अम्मी कसम घोड़े जैसा हाथ था!”
वो रिक्शा वाला मुस्कुराता हुआ अपना हाथ आगे बढ़ाता है है और कहता है. “कहीं ऐसा हाथ तो नहीं था।” आदिल की तो जैसी जान हलक में अटक गई थी. वो ज़ोर से चिल्लाना चाहता था लेकिन कोई जैसी उसकी जुबान पर ताला लगा दिया हो। वो हम रिक्शे की सीट बराबर कप्ता हुआ हमारे भयानक हाथ को देख रहा है। और फिर हमें ड्राइवर के चेहरे को जो लग रहा था इंसान का, लेकिन जैसा उसने इंसानियत नहीं किसी हैवान ने कब्ज़ा कर रखा हो। आदिल भागने के चक्कर में काला खाकर उस रिक्शा से गिर पड़ता है। और ज़ोर से भागता है।
रिक्शा वाला हंसता हुआ बोलता है, “क्या हुआ भाईजान, आओ दूसरी गली तक छोड़ दो।”
आदिल अब रुकने वाला नहीं था. वो अपने घर की तरफ भाग रहा है पीछे से आने वाली उस रिक्शा वाले की शैतानी हंसी की आवाज भी ख़तम हो गयी.
आख़िरकार वो अपने घर के दरवाजे पर पहुंच गया। और ज़ोर से पागलों की तरह दरवाजा पिटने लगा। “अस्मा दरवाज़ा खोलो जल्दी! ख़ुदा के लिए दरवाज़ा खोलो अस्मा जल्दी!”
उसकी बीवी आसमा ने दरवाजा खोला तो देखा कि उसका पति पूरा पसीने के भीगा है और ज़ोर ज़ोर से कप रहा है। “अरे तुमको क्या हुआ? इतना डरे हुए क्यों हो?”
“अस्मां बस ज़िंदा वापस आ गया यही बहुत है।” आदिल दरवाज़े पार खड़ा खड़ा बोलता रहा, "आज मौत से सामना करके आया हूं।" उस्की बीवी पूछती है कि आखिर हुआ क्या साफ, साफ बताओ। वो अपनी बीवी को पूरी बात बताती है कि कैसे एक चने बेचने वाली औरत को जब उसने पैसे देने चाहे तो उसका हाथ घोड़े जैसा था। और जब वो वहां

से भागा और रिक्शा वाले से मिला तो उसका हाथ भी घोड़े जैसा
था.
पूरी बात सुनते ही अस्मा ज़ोर से हंसती है, “घोड़े जैसा हाथ
था? आप मज़ाक कर रहे हैं ना।” अपनी बीवी की ये बात सुनकर उसका डर अब गुस्से में बदल गया। वो चिल्लाकर अस्मा से कहता है,
"आपको मज़ा आ रहा है। ये सब हकीकत है!" अस्मा भी थोड़ा
गंभीर होकर कहती है, "बाप रे! घोड़े जैसा हाथ?" वो अपना
हाथ आगे बढ़ती है और अपने पति से पूछती है, “कहीं ऐसा
हाथ तो नहीं था।” आदिल अपनी बीवी के हाथ को देखता है और अब उसका दिमाग भी जवाब दे चुका था। उपयोग समझ नहीं आ रहा था क्या सच है और क्या हम। उसकी बीवी का हाथ भी घोड़े जैसा था, और वो भी हमें चने वाली औरत और हमारे रिक्शा वाले की तरह मुस्कुरा राही थी.
आदिल को ऐसा लगा जैसे उसकी आँखों के आगे अँधेरा
छने लगा है. ज़मीन और घर की छत घूम रही थी। वाह
बदहवास होकर दरवाजे के पास ही गिर पड़ता है। पता नहीं वो
कितनी देर तक बेहोश रहा। लेकिन लोग कहते हैं जब उसने आँखें
खोली तो वो अपने बिस्तार पर थे और चारो तरफ उसके पड़ोस थे।
उसकी बीवी आसमा उसके हाथ माल रही थी। अपने पति को होश में
देखकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। “ऊपरवाले का शुक्र है
आपको होश आ गया।” हमसे रोते हुए और अपने पति का हाथ
बदलते हुए कहा, “आपने दरवाजा खटखटाया था, मैं जब खोलूंगा
गई तो आप बेहोश पड़े।”
आदिल ने अपनी बीवी का हाथ झटका दिया, "डर हो जाओ मुझसे!" Usne
चिल्लाते हुए कहा, "ये भूत है! ये आसमां नहीं है!"
मेरे पिता बताते हैं कि बड़ी मुश्किल के बाद ही आदिल को काबू
मैं लाया जा सका. मस्जिद के इमाम को बुलाया गया तो अनहोनी हो गई
बताया कि उसपर जिन्न का असर हुआ है। कोई बहुत ताकतवार जिन का. ऐसे
जिन्न अक्सर पिछला नहीं चोदते और कोई भी रूप ले सकते हैं। Kayı
माहीने तक दावा तबीज़ करने के बाद ही आदिल की तबीयत में
सुधार आया. लेकिन कहते हैं कि आज भी वो पहले जैसा नहीं हो
पाया. कभी-कभी खुद से ही बातें करता है। नींद से अपने आप
चीखते हुए उठ जाता है। और रात को बहार निकलने ने नाम से
भी उसकी रूह कप जाती है। क्या कहानी में कितनी हकीकत है और
कितना झूठ ये तो मुझे नहीं पता। लेकिन ये उन कहानियों में से है
है जो आज भी मुझे डर देती है।
*-------*----------*

# काली बिल्ली

शादी और बच्चा होने के बाद फ़िरोज़ का वही सपना था जो हर संयुक्त परिवार में रहने वाले किसी भी नवविवाहित लड़के का होता है. अपना खुदका अलग एक घर. जहां वो अपनी बीवी और बच्चों के साथ ख़ुशी ख़ुशी अलग रह सके. लेकिन आज कल घर ख़रीदना इतना आसान नहीं. सस्ता और अच्छा घर मिलना तो और भी ज़्यादा मुश्किल. फ़िरोज़ ने अपने सभी दोस्तों और रिश्तेदारों से कहा हुआ था कोई घर दिखे तो बताना जरूर। कुछ घर देखे भी लेकिन कभी दाम बहुत ज़्यादा होता था तो कभी एरिया पसंद नहीं आता था। माहीने गुज़रते गए और अपना खुदके घर होने की चाहत फ़िरोज़ के दिल में दबी रह गई.

लेकिन एक दिन सुबह उसका फोन बजता है। फोन के दूसरी तरफ उसका ब्रोकर दोस्त अयान होता है। वो बताता है कि एक घर दिखा है जो फ़िरोज़ के बजट में हो सकता है उसका उपयोग करें। मीटिंग फिक्स होती है. घर शहर के दूसरी तरफ था. एरिया अच्छा था लेकिन घर के हिसाब से दम इतना कम क्यों था ये बात फ़िरोज़ को समझ नहीं आ रही थी। और ब्रोकर की बातों से ऐसा लग रहा था कि वो घर को जल्दी से जल्दी बिकवाना चाह रहा था. कुछ तो गड़बड़ थी. लेकिन अपना खुदका घर होने की चाह फ़िरोज़ के सामान्य ज्ञान पर भारी पड़ गई। डील फिक्स हो गई. कुछ हफ़्ते बाद ही उसने सारा सामान नये घर में शिफ्ट कर लिया कर दिया. एक बड़ी दावत हुई जिसमें सारे घरवाले और दोस्त यार भी आओ. फ़िरोज़ ने इस दावत में हमारे नये घर के आस-पास रहने वालों को भी आमंत्रित किया। क्या उम्मीद में इसकी बहनें जान पहचान भी है बढ़ जाएगी. लेकिन हमारी पार्टी में कोई भी नई पड़ोसन नहीं आया। सिर्फ एक बुज़ुर्ग औरत जिसका नाम आरती था वो ही आई।

लेकिन पूरी दावत के दौरन वो खामोश रही। एक कोने में बैठ कर जूस पीती रही. ना किसीसे बोलचाल ना नये पड़ोसियो को शुभकामनायें। फ़िरोज़ की बीवी सना भाग-भाग कर सभी मेहमानों को देख रही थी कि कहीं किसी चीज़ की कोई कमी नहीं। उसकी नज़र आरती पर पड़ती है. वो फ़िरोज़ से पूछती है कि ये बुज़ुर्ग औरत कौन है। वाह बताता है कि ये अपनी नई पड़ोसन है। साना ख़ुशी ख़ुशी उनसे मिल्ने जाती है. “आंटी कैसी हैं आप।” वो मुस्कुराते हुए उनसे कहते हैं है, "किनारे क्यों बैठी हैं? आइए महिलाओं में।" ये सुनकर आरती ने कुछ ऐसा बोला कि जिसकी सना को बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। वाह सना उसकी तरफ़ मुड़ती है और उसकी आँखों में आँखें डाल कर बिल्कुल अभिव्यक्तिहीन होकर बोलती है, "तुमने ये घर क्यों लिया? तुम्हें

नहीं पता यहां भूत प्रेत का साया है।”
सना को समझ नहीं आया कि वो कैसे रिएक्ट करेगी। वो चौख
कर लड़खड़ाती हुई ज़ुबान में पूछती है, “क्या मतलब है आप का?”
आरती फिर वही बात दोहराती है, “यहाँ भूत प्रेत का साया है।”
वो अपना पर्स उठाती है और बिना कुछ आगे कहे दावत से चली
जाती है. लेकिन ये बात सना के दिल में बिल्कुल घर कर गई थी।
दावत ख़तम होने के बाद उसने ये बात फ़िरोज़ को बताई। लेकिन
उसने हंसी हंसी में ये बात उड़ा दी। सना का दिल लेकिन बेचैन हो
रहा था. आरती की बात अभी भी उसके ज़ेहन में घूम रही थी। कुछ
हफ़्ते गुज़र गए. फ़िरोज़ और उसकी पत्नी को हमारे घर में कुछ अजीब
मेहसूस नहीं हुआ लेकिन उसके यहां आने वाले मेहमान कभी-कभी
अजीब अस्पष्ट चीज़ों के बारे में बात करते थे। एक रात
फ़िरोज़ की सास को किचन से बिल्ली की आवाज़ सुनाई दी। वो किचन में
जाती हैं लेकिन वहां कोई नहीं था। एक बार सना की चचेरी बहन को ऐसा
लगा कि जैसे कोई रात भर धीरे-धीरे दरवाजे पर दस्तक दे रहा
था. वो दरवाज़ा खोल कर देखती है तो वहां कोई नहीं था। लेकिन
फ़िरोज़ को अभी भी ये बातें वेहम ही लग रही थी। हां शायद वो
काम में इतना उलझा हुआ था कि इस बारे में सोच ही नहीं रहा था।
फिर आया वो दिन जिसने हमेशा के लिए सब कुछ बदल दिया।
उस दिन के बारे में सोच कर आज भी फ़िरोज़ और उसकी फैमिली डर से
कपने लगती है. वो जनवरी की एक सर्द रात थी. फ़िरोज़ की साली यानी
सना की बड़ी बहन भी आई थी. अपने बेटे को सुलाने के बाद
सना और उसकी बहन ने गेस्ट रूम में खूब बातें कीं
गप्पे लड़ाये. रात के 11 बज चुके थे. सना अपने रूम में चली
गई और उसकी बहन तारा अपने फोन में लग गई। वो फ़ोन चला
हाय राही थी कि इसका इस्तेमाल ऐसा महसूस हुआ कि शायद कमरे में कोई आया
है. उसने पलट कर देखा तो दरवाजे पर एक काली बिली खड़ी थी। Usne
पहली बार इतनी काली बिल्ली देखी थी। क्या अँधेरे में उसकी आँखें हैं
अंगारे की तरह चमक रही थी। वो बिल्ली तारा को घूरे जा रही थी।
तारा ने उसकी तरफ हाथ दिखाया और उसे भगाने के लिए ज़ोर से "हट"
काहा. लेकिन वो बिली अपनी जगह से नहीं हिली। वो बिना पलक छपके
घूरती राही का प्रयोग करें. तारा का गुस्सा बढ़ गया उसके पास में ही पड़ी
सना के बेटे की गुड़िया उठाकर हमें बिल्ली को फेंक कर मारी। वाह गुड़िया हमें
बिल्ली के चेहरे पर लगी और वो भाग गई। तारा अपने फ़ोन में
दोबारा लग गई. पता ही नहीं चला कब उसे नींद आ गई।
रात के लगभाग 3 बजे सना की आंख खुलती है। बहुत उपयोग करें
अजीब सा एहसास हो रहा था. पता नहीं क्यों उसकी आंख खुल गई थी।
उसने ध्यान दिया तो कोई धीरे-धीरे रोने की आवाज आ रही थी।
ये आवाज गेस्ट रूम की तरफ से आ रही थी। सना का दिल जैसे बैठ
गया. समझ ही नहीं आ रहा था कि वो क्या करे। वो कपटे

हाथों से अपने पति को उठती है। फ़िरोज़ आँखें माल्टा हुआ
उठता है, “अरे क्या हुआ यार?”
सना उसकी तरफ मुड़कर लड़खड़ाती हुई आवाज में कहती है, “गौर
से सुनो. कुछ सुनायी दिया?” डोनो को ही वो धीमी सी रोने की आवाज
सुनायी दे रही थी. डोनो पति पत्नी बिस्तर से उतरकर तेज़ भागते
ह्यू गेस्ट रूम में पहुछते हैं।
अंदर एंटर करते ही उन्हें ऐसा मंजर देखा जो किसी भी तरह
मज़बूत से मज़बूत दिल वाले को भी डर कर पत्थर बना सकता हूँ
है. तारा बिस्तर पर सीधे लेती थी और धीमे धीमे रोये जा रही
थी. और उसके ऊपर बैठी थी वही गुड़िया जो उसने बिल्ली को मारी थी। इतना
हाय नहीं वो गुड़िया बार-बार तारा को थप्पड़ लगाए जा रही थी नॉनस्टॉप। “छोड़ दो मेरी बहन
को।” सना ज़ोर से चिल्लाती है, “छोड़ो
उपयोग।" दूसरी तरफ़ फ़िरोज़ वही पत्थर की तरह खड़ा था जैसा मानो
उसका दिमाग ही काम नहीं कर रहा था। वो पसीने से भीगा हुआ
और डर से काप रहा था. सना भागती हुई तारा की तरफ़ जाती है और
गुड़िया को पकड़कर कमरे के दूसरी तरफ फेंक देती है। वो गुड़िया अपनी
जोड़ों पर गिरती है जैसे कोई इंसान। फ़िर फ़र्श पर पीट के बाल गिर
जाती है. ये मंजर ऐसा था कि कुछ देर तो तीनो को समझ ही नहीं आया
आया आख़िर हुआ क्या था. सना ज़ोर से चिल्लाती है, “आरती आंटी ने
सही कहा था. बहुत है इस घर में।”
अगले दिन ही फ़िरोज़ ने घर खाली कर दिया। बाद में पता चल
कि उसने पहले जितने भी लोगों ने ये मकान लिया था, कोई भी एक
माहीने से ज़्यादा टिक नहीं पाया। कहते हैं आज भी वो मकान
खाली है. वहां कोई नहीं रहता. अब तो वो घर जैसा खंडहर हो
चुका है. कुछ लोगों को आज भी कभी हमारे घर से अजीब
अजीब सी आवाज़ें आती हुई सुनाई देती हैं। वो घर आज भी वहां
खड़ा है. अपने अंदर कुछ राज़ छुपाये हुए।
*----------*----------*

# शापित पहाड़ी

मेरा नाम जेम्स है. आज जो मैं आपको बताने वाला हूं ये
मेरी जिंदगी से जुदा एक ऐसा लम्हा है जो आज भी मुझे डराता है।
एक अजीब और डरावना किस्सा जो इतने साल गुजर जाने के बाद भी
मानो कल की ही बात लगती है। ये बात आज से लगभाग बीस साल
पहले की है. मेरा ग्रेजुएशन बस पूरा ही हुआ था। आगे भविष्य
मैं क्या करना है यहीं सवाल मेरे ज़ेहन में घुमता रहता था।
सच कहूँ तो ये सवाल जैसा मुझे सोने नहीं देता था। बस करो
दोस्त एरिक और जॉन आज मेरे घर आये हैं। एरिक कॉलेज की
फुटबॉल टीम का कप्तान था. लंबा हट्टा कट्टा, नीली आंखें और
सुनहरे बाल. हैम यूज़ शेर दिल एरिक बुलाते थे क्योंकि वो बंदा किसी को
भी चीज़ से नहीं डरता था। आत्मविश्वास और हिम्मत तो जैसे
ऊपरवाले ने हमसे कूट कूट कर भारी थी। दूसरी तरफ जॉन एक दुबला
पटला, चश्मा लगाने वाला जीनियस लड़का था। जो लड़कियों से बात करना
तो डर, उनसे नज़र मिलाने में भी कतराता था।
ग्रेजुएशन के बाद आज नहीं तो कल हम दोस्त अपने-अपने रास्ते
निकलने वाले. लेकिन क्यों ना जितने दिन बचे हैं उनको हम
यादगार बनायें। यह ख्याल हम तीनो के दिमाग में था। अब
प्लान बनाना शुरू हुआ कि घुमने कहां चला जाए। एरिक हर बार की
वैसे कुछ एडवेंचर ट्रिप टाइप का करना चाहता था। लेकिन मैं और
जॉन को ये प्लान पसंद नहीं आया।
'कृपया दोस्तों, लंबी पैदल यात्रा पर चलते हैं ना।' एरिक अनुरोध करते हुए बोला,
“हर बार प्लान बनाता हूं मैं लेकिन तुम लोग मना कर देते हो। है
बार चलो ना, ग्रेजुएशन भी ख़त्म हो गया टालते टालते।” पाता

नहीं क्यों मुझे बहुत सहानुभूति हुई एरिक पार। वो बहुत अच्छा लड़का है
था, फुटबॉल टीम का कप्तान था. वो चाहता तो अपने लिए दोस्तों की
लाइन लग सकती है. लेकिन उसने मुझे और जॉन को चुना। उस्के
हमारे फ्रेंड सर्कल में आने से ही तो मैं और जॉन इतने लोकप्रिय हैं
हो गए स्कूल में.
"ठीक है। इस बार पैदल यात्रा पर चलते हैं।" मैंने उसके कंधे पर
हाथ रखते हुए कहा.
लेकिन जॉन थोड़ा नखुश था, "इतनी ठंड और बर्फबारी में? पागल।"
हो गए हो क्या।" एरिक जवाब में कहता है कि बर्फबारी में लंबी पैदल यात्रा हो रही है
पर जाने से एडवेंचर का ज्यादा मजा आएगा।
आख़िरकार कुछ भी हो गया प्लान फिक्स हो गया। लंबी पैदल यात्रा के लिए हमने
एरिक की तैय की हुई जगह माउंटेन 45 जाने का प्लान बनाया। तु
माउंटेन 45 अपने आप में एक बहुत दिलचस्प पहाड़ है। तु
गर्मियों में पर्यटक स्थल रहता है पैदल यात्रियों का लेकिन सर्दियों में
यहां शायद ही कोई जाता था। ये अफ़वा थी बर्फबारी के मौसम की
दौरां ये पहाड़ी भुतहा हो जाती थी। बहुत से लोग इसे बकवास करते हैं
मानते थे लेकिन बहुत से हाइकर्स ने अपने साथ कुछ अस्पष्ट किया
चीजें होनी की बात भी कहीं। एरिक पिछले तीन साल से वहां जाने
की रिक्वेस्ट करता था लेकिन हर बार हम लोग मना कर देते थे। लेकिन
क्या साला प्लान बन ही गया।
दो दिन बाद ही हम लोग तैयार हैं. जॉन अपनी कार लाया था
जिसमें हमने अपना लंबी पैदल यात्रा का सामान, खाना और बाकी चीजें
रख ली. और शुरू हुआ हम लोगों का सफर। ये पर्वतीय राज्य के
दुसरी तरफ था. आबादी से बहुत दूर. प्रकृति के बीचो बीच.
माउंटेन के सबसे नज़दीकी था ब्लैकविले नाम का शहर। वहां की
आबादी मुश्किल से सौ लोगों की ही होगी। हाइकर्स अपनी कारों को इसी शहर में
मैं पार्क कर देता हूं। फिर आगे पहाड़ी की चढ़ाई पर निकलेंगे।
दस घंटे की लंबी ड्राइविंग के बाद हम आखिरकार ब्लैकविले शहर में हैं
पाहुचे. बड़ी ही अजीव जगह थी. ऐसा लगता था कि ये शहर आज भी
पचास साल पीछे चल रहा है। घरों की बनावत पुराने
ज़माने की. ये कहना बेहतर होगा कि ये एक घोस्ट टाउन लग रहा था।
शहर के दूसरे कोने पर एक होटल था। छोटा सा होटल जो पार्किंग
सुविधा दीया था. हम लोगों ने कार पार्क की और होटल के रिसेप्शनिस्ट
की तरफ जाने लगे. वो एक अधेड़ उम्र का आदमी का। कपडे मैले,
उसके बाल झाड़ चुक द. वो हम लोगों को देख कर ऐसे रिएक्ट करें
करता है कि जैसा भूत देख लिया हो। शायद ऑफ सीजन में हाइकर्स
को पहली बार उसने देखा था।
“बर्फबारी के मौसम में लंबी पैदल यात्रा करने आये हो?” उसने धीमी दबी हुई
आवाज़ में कहा, "इसका समय कोई नहीं आता। आज से ही पैदल यात्रा पर"
जाओगे या आज आराम करोगे.?

“नहीं अभी से जा रहे हैं हम।” एरिक ने मुस्कुराते हुए कहा, “हां
लो कार पार्किंग के 100 डॉलर।”
वो रिसेप्शन वाला आदमी ठंड से कपटे हाथों से नोट ले लेता
है. और रसीद बनाकर एरिक को पकड़ा देता है।
“जानते हो ना इस पहाड़ी पर बर्फबारी के मौसम में कुछ अजीब है
सी चीज़े होती हैं।” ये बोलते बोलते उस आदमी ने अपनी आंखें
सिकोड ली, "क्या मौसम में लंबी पैदल यात्रा ख़तरनाक हो सकती है।" ये सुनते हाय
एरिक मुस्कुराता है और अपनी जिंदगी से कुछ ऐसी चीज निकलती है जिसे
मेरी, जॉन और उस बुजुर्ग की आंखें फटी रह जाती हैं। वो एक
रिवॉल्वर थी. “एरिक तू गन लाया है?” मैने लड़खड़ाती हुई आवाज
मैं पुचा.
"हां लाया हूं। इलाज से रोकथाम बेहतर है। क्या पता कब जरूरी।"
पड़ जाये।” हम तीनो चल पड़े पहाड़ी की तरफ
पर बड़े बैग में जिसका टेंट का सामान, राशन वगैरा था। मैं और
बदन पर खूब सारे ठंडे के कपडे। पर्वत 45 एक बहुत न्यारा
पहाड़ था. इस्के टीन लेवल द. पहली चढ़ाई के बाद थोड़ा सादा
मैदान और जंगल. दूसरे लेवल की पढ़ाई के बाद फिर थोड़ा सादा
मैदान और जंगल और आखिरी में पहाड़ की चोटी।
इसिलिए हाइकर्स टीन राउंड में ही पूरी हाइकिंग करते थे। हमारी
भी यही योजना थी. बर्फबारी हो तो रही थी लेकिन आम दिनों के मुकाबले
थोडी कम थी. लेकिन हवा में ठंड बहुत थी। झोके इतने ठंडे
कि चेहरे के लहू को जमा रहे। जॉन बार बार अपना
चश्मा साफ कर रहा था क्योंकि बर्फ की वजह से उसके चश्मे गंदे
होते जा रहे थे. लेकिन हम सबको मजा आ रहा था। मैं ज़्यादा
बाहर नहीं घूमता था तो मेरे लिए ये अनुभव कुछ अलग था।
हम तीनो दोस्त बातें करते हुए चढ़यी कर रहे थे। कभी
लड़कियों की बात, कभी भविष्य की और कभी इस बर्फीले मैदान की। है
बार सच में बर्फबारी कम हुई थी। वो पहाड़ी जो पूरी बर्फ से ढक
जाती थी, इस बार पेड़ों के गिरे हुए पुराने पत्ते भी सही से ढके
नहीं. हम कई घंटों से चल रहे थे. अंत में हम पहले स्तर पर हैं
पर पाहुचे. इतने ऊपर से नज़ारा देखने लायक था। ऐसा लग रहा था
कि हम किसी बड़े से बर्फीले समुंदर को देख रहे हैं। हमने
अपना बैग खोला और टेंट लगाने लगे। थोड़ी मेहनत के बाद टेंट
तैय्यार था. टेंट के बाहर आग भी जल रही थी. शहर की भेड़ से
दुर प्रकृति के बीच. ये भावनाएं हाय कुछ अलग थीं. टेंट काफी बड़ा था
तो तीनो उसी में बैठे थे. गप्पे लड़ाते लड़ाते कब रात के 11 बजे
गए पता ही नहीं चला.
कल हमें दूसरा लेवल तक जाना था तो कर रिफ्रेश होना
ज़रूरी था. हम तीनो ही लेट गए. मैं भी टेंट की छत को ताकता
रहा और पता नहीं कि ख्यालों में खोया रहा। फिर मुझे नींद

आ गयी. पता नहीं कितनी देर सोया था कि अचानक किसी वजह से मेरी आँख खुली. मैं उठ कर बैठ गया. मैंने अपने अगल बगल देखा तो एरिक और जॉन गहरी नींद में सोए हुए थे। आख़िर मैं किस वजह से जाग गया था यही ख्याल मेरे दिमाग में घूम रहा था. अचानक मुझे कुछ सुनायी देता है। शायद कोई टेंट के बाहर था. आवाज कुछ ऐसी थी कि किसी कदम की वजह से गिरे हुए पत्ते और छोटी लड़कियाँ मसल रही हो। हो सकता है कोई जानवर हो क्योंकि कोई इंसान इस वक्त यहां क्या करेगा। मैं खुदको तसल्ली दे रहा था, लेकिन मैं जानता था कि मैं अंदर से डरा हुआ हूं। वाह आवाज़ अभी भी धीरे-धीरे टेंट के चारों तरफ घूम रही थी। मैंने लड़खड़ाती हुई आवाज़ में खा, “कौन है?” मेरे ये बोलते ही वहां सन्नाटा छा गया. मैं कुछ देर वैसे ही बैठ रहा फिर लेट गया. लेकिन नींद जैसी मेरी आँखों का पता भूल चुकी है। अग्ली सुबह मैं सबसे पहले उठकर टेंट के बाहर निकला और मैंने देखा कि टेंट के बाहर किसिके जोड़ों के निशान थे। वो कोई जानवर नहीं बाल्की इंसान की जोड़ी। मेरी साँसें तो जैसे मेरे गले में ही अटकी हैं गई. इसका मतलब रात को सच में कोई टेंट के बाहर था। और इतनी ठंड में कौन नंगे जोड़े घूम रहा था। मैं बधावस होकर टेंट में घुसा और अपने दोस्तों को जगाया। वो निसाहन देख उनके चेहरे की भी रंगत उड़ गई थी। जॉन तो कहने लगा चलो वापस चलते हैं. लेकिन एरिक अपने हाथों को एक दूसरे से बदलते हुए बोला, "हो सकता है कोई शराबी हो। नीचे शहर से आया हो।" मुख्य लेकिन है जवाब से संतुष्ट नहीं था. फिर मैंने ऐसा कुछ देखा जो मुझे और परेशान कर दिया गया. वो जोड़ी के निशान नीचे शहर की तरफ नहीं बाल्की जंगल के अंदर जा रहे थे।

पता नहीं मुझे क्या सूझी मैंने अपने दोस्तों से कहा, “आओ देखते हैं ये निशान कहां जाते हैं। ऐसा तो किसी को नहीं मदद की ज़रूरी हो।” मेरा पॉइंट सॉलिड था तो मेरे दोस्त भी मेरे पीछे चल दिये. वो जोड़ी के निशान घने जंगल में घुसे जा रहे. अब उनके बीच का फासला भी बढ़ रहा था। ऐसा लग रहा है रहा था कि वो जो भी आदमी था वो भागने लगा था। पीचा करते हैं हुए हम एक ऐसी जगह पहुचे जिसे समझा पाना थोड़ा मुश्किल है था. जंगल के बीच की एक गोल जगह पर सारे पेड़ कटे थे। मैं और कई सारे डंडे गड़े थे. और उन दंदों पर जंवारों की हड्डियाँ थी जैसी बकरी, ख़रगोश वागैरा। वो पटले पटले धागो से उन डंडो पर लटकी थी. हम तीनो कभी एक दूसरे का मुँह देखते तो कभी उन अजीब सी चीज़ों को। जॉन की हिम्मत जवाब दे रही थी. Usne डरते हुए कहते हैं, "भाई चलो यहाँ से यार। कुछ गड़बड़ है यहाँ।" उसकी बात को एरिक बीच में रोकता है, “जॉन, जेम्स तुम देखो निशान नीचे की तरफ जा रहे।”

हम फिर से उनका पीछा करते हैं। वो निषां आधी जामि नदी
के पास जेकर गायब हो गइल. वो जो भी था वो शायद हमें नदी
मैं कूद गया था. लेकिन आख़िर ये किया किसने। कौन था वो. जांघ
तीनो चुप चाप वापस टेंट में आ गये। जॉन डर से काप रहा
था. वो वापस घर जाना चाहता था। लेकिन एरिक की यात्रा जारी रहेगी
चाहता था. आख़िर में उसकी ही बात मान गयी। हमने फिरसे
चढ़यी शुरू की. हम आगे बढ़ते जा रहे थे और अपने पीछे
बर्फ़ पर अपने जोड़ों के निशान छोड़े जा रहे थे।
चढ़यी मुश्किल होती जा रही थी. थकन अपना असर आज
कुछ जल्दी ही दिखा रही थी. लेकिन इस थकन में भी उन दोनों की जोड़ी है
निशान का ख्याल मुझे बार-बार आ रहा था। अंत में हैम
पहाड़ के दूसरे स्तर तक पहुँचे। शाम हो रही थी. हमने
फिरसे टेंट लगया. मुझे अब भी जॉन के चेहरे पर डर साफ साफ
दिख रहा था. हमने आग जलायी. कुकीज़, चिप्स खाये. मैं दो दिन
मैं ही अपने हॉस्टल का खाना मिस करने लगा था। हमने देर तक
बात की लेकिन उन जोड़ों के निशान का विषय कभी नहीं उठा। हां काहू
तो हम तीनो हाय यूज़ भूलना चाहते थे। आखिरकर हम तीनो सो
गये. नीद का अभी भी दूर तक  नामो निशान नहीं था। कुछ वक्त
हाय गुजरा होगा कि मुझे फिर से सुनाई दी वो आवाज। वो आवाज जो मैं हूं
बिल्कुल भी नहीं सुनना चाहता था. टेंट के बाहर कोई था. मैंने
कपटे हाथों से एरिक को उठाया।
"एरिक उठो। बहार कोई है।" जॉन भी उठ गया. एरिक आज अपनी गन
तकिया के नीचे ही ले कर सोया था. उसने गुस्से में टेंट की चेन
खोली और हम तीनो बहार निकले। बहार बिल्कुल अँधेरा था, आग भी
बुझ चुकी थी. हमें कुछ आवाज सुनाई दी जो हमारे लेफ्ट साइड से
आई थी.
“कौन है वहां?” मैने हमें तरफ टॉर्च मारते हुए कहा
लड़खड़ाती हुई ज़ुबान में कहा।
कोई जवाब नहीं आया. फ़िर टुरेंट ही हमारी राइट साइड किसी के दौड़ने की
आवाज़ आयी. मैने फिरसे टॉर्च मारी. कोई जवाब नहीं आया. एरिक का
गुस्सा सातवे आसमान पर था. उसने चीख़ कर कहा, “कौन है?!
भाग जाओ यहां से वरना गोली मार दूंगा।” उसने हवा में एक आग
किया.
उसके तुरंत बाद ही हमने कुछ ऐसा सुनायी दिया जो एरिक जैसा शेर दिल
इंसान को भी डराने के लिए काफी था। हमें एक गाल सुनाई दी. इक
तेज़ अजीब सी चीख. ऐसी आवाज की जैसे कोई गेल जानवर और इंसान
की आवाज को मिक्स कर दिया गया हो। हम तीनो डर से काप गए. आज
पहली बार मैंने एरिक को डरा हुआ देखा था। हम भाग कर टेंट
मैं घुस गया. और चेन बंद कर ली. आख़िर वो क्या चीज़ थी. कोई
इंसान या कोई जानवर. क्या सच है ये पहाड़ भुतहा है। जांघ

वही टेंट के अंदर पुतले की तरह बैठे रहे। पूरी रात बिना कुछ
बोले डरते हुए, कापते हुए। सुबह होते ही हमने अपना सामान
बंधा और तेजी से नीचे शहर की तरफ भागने लगे। डर का
मंज़र इतना था कि हमने रात को लेवल 1 पर टेंट भी नहीं लगाया।
सिर्फ चलते रहे या काहू भागते रहे. अंततः अगले दिन सुबह 3 बजे
हैम होटल पर पहुचे।
हमारी हालत देख कर रिसेप्शन वाला समझ गया कुछ
ना कुछ हुआ है. लेकिन अजीब बात है ये कि वो मुस्कुरा रहा था।
हलाकी हमें अब इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ना था। हमने अपनी गाड़ी
उठयी और वापस हॉस्टल आ गये। वो जंगल वाली चीज़ क्या थी पता
नहीं. कोई इंसान कोई आत्मा कोई जानवर पता नहीं। लेकिन आज भी उसके
बारे में सोच कर जिस्म में सिहरन उठती है। पता नहीं
माउंटेन 45 अपने अंदर और कौन से राज़ छुपाये हुए हैं।
*----------*----------*

## एक टिप्पणी
## लेखक से----

प्रिय पाठकों,
धन्यवाद। क्या लघुकथाओं का संग्रह है
अंत तक पढने के लिए. ये एक लेखक की तरह मेरी पहली
रहस्य डरावनी किताब है। कुछ काल्पनिक कहानियाँ जो उम्मीद हैं
करता हूं आपको पसंद आएगी।
अंत में एक अनुरोध जो हर लेखक किताब की करता है
का रिव्यू और फीडबैक जरूर दीजिएगा, मैं अपने आप को
और ज़्यादा बेहतर कर सकु एक लेखक के तौर पर एक और
इंसान के तौर पर भी.
अगली किताब के साथ जल्दी मिलते हैं।
-
दास्तान अली